सारथी – जरूरतमंद कलाकारों के मददगार

दोस्तो

ठीक 20 साल पहले (14 अगस्त 1988) स्व. कमला देवी चटोपाध्याय जी ने हमारे बुजूर्ग बुनकरों द्वारा बनाया गया तिरंगा हुनरमंदो की नई पीढ़ी को सौंपा था। उस दिन से आज तक हम सब साथ मिलकर हर साल किसी एक खास विषय को लेकर आजादी के जश्न को मनाते आ रहें हैं।

इस वर्ष का विषय है

आजादी का नया नारा – बाहुल्य, संयुक्त, सक्षम!

सघीय शब्द सदियों से भारतीय सभ्यता से जुड़ा रहा है। सघीय सिद्धात "अनेकता मे एकता" को प्रकट करता है और भारत का यह संघीय ताना–बाना पूरे संसार को प्रेरणा दे सकता है। लेकिन मुझ लगता है कि "सघीयता" (फेडरलिज्म) शब्द पर न तो आम आदमी कोई प्रतिक्रिया देता है और न कलाकार इस शब्द को समझ पाता है। हांलाकि यह शब्द हमारे जीवन में उतना ही मायने रखता है जितना कि किसी इमारत मे नींव का पत्थर। कलाकारों के जीवन व व्यवहार म भी इसकी जड गहर तक फैली हुई है। उदाहरण के लिए विभिन्न लोक कलाकार- - कठपुतली वाले, मदारी, कलन्दर, भोपा, नट, बजानिया, गोले वाला, मसेत, कामड सहित कई धर्म और जाति के लोग शादीपुर डिपो के सामने झुग्गी--झोपडी बस्ती मे पिछले लगभग 40 साल से एक साथ रह रहे हैं। ये कलाकार पिछडे वर्ग के ऐसे ग्रामीण कुनबो से हैं, जिनके पूर्वजो ने कभी एक जगह बसना जरूरी नहीं समझा था उन्होने हमेशा ठोर–ठोर घूमते हुए, तीन ठीये पर रोटी पकाई, खाया कमाया और पीढिया पाल ली। लेकिन शहरों ने उन्हें एक जगह समेट दिया।

उनके फन को देखकर 1976 मे 'भूले बिसरे कलाकार सोसाइटी' बनवाने का काम शुरू हुआ। शुरू मे इन सबको इकटठा करने मे जातीय मनमुटाव और आपसी झगडो की वजह से काफी मुश्किल आयी। हमे इनकी आपसी एकता को बनाने के लिये पूरे दो साल लगे। पर सामने सबसे बडी चुनौती सभी को समान अधिकारों के साथ संस्था मे शामिल करने की थी। भाट बिरादरी के लोग- -जो तादाद मे सबसे ज्यादा थे- वे बारह पाल (12 जातियों का एक पौराणिक समूह) वाली संस्था से जुडने के लिए तैयार थे परन्तु समिति के मनेजमेन्ट मे अन्य जातियों के आरक्षण के विरूद्ध थे। लेकिन मैंने भी हिम्मत नही हारी। लगातार कोशिश चलती रही और आखिर में "सब अलग होकर भी एक हैं" नारे के साथ इन सब की एक ठोस पहचान बनाने के लिए 1978 में 'भूले बिसरे कलाकार कोऑपरेटिव सोसायटी' बनवाई। यह सोसायटी हिन्दुस्तान के पारम्परिक कलाकारों की पहली संस्था थी जिसका सचालन कलाकार खुद करते हैं।

कहना न होगा कि 'भूले बिसरे कलाकार कोऑपरेटिव' की स्थापना के बाद लोक कलाकार सहकारिता व "जीयो और जीने दो" का मतलब व फायदों को समझ कर ही इसके झण्डे तले इकटठा हुऐ। ये घुमन्तू कलाकार इस बात को समझ गये थे कि आगे बढने के लिए या सक्षम होने के लिए बहुलता मे एकता जरूरी है।

हमे यह नही भूलना चाहिए कि अग्रेजो ने भारत मे ऐसा शासन स्थापित करने का प्रयास किया था जिसके जरिये वे लोगो को बांट कर पूरे देश को अपना गुलाम बना सके। लेकिन आजादी की लडाई में लोगों ने धर्म, क्षेत्र, भाषा, रंग, जाति, लिंग आदि की सारी दीवारो को तोड़ एकता का उदाहरण बनाया था। आज हमे "सघीयता" को फिर से समझने की जरूरत इसलिये भी है क्योंकि भारत मुख्य रूप से गावो मे बसता है। भारत सरकार ने ग्राम पंचायतों को मजबूत करने के लिए जोर दिया है। सविधान के 73वें और 74 वे सशोधन का आशय भी गाधी की "ग्राम स्वराज्य" की कल्पना को अधिक जीवन्त व प्रभावी बनाना ही है। इस मसले पर विशेषज्ञ और नीति–निर्धारको के बीच हुई लम्बी बहसो को आम आदमी के दायरे में लाये जाने की जरूरत है।

जब भारत मे पहली बार 3 से 7 नवम्बर 2007 तक होने वाले चौथे अन्तर्राष्ट्रीय सघवाद सम्मेलन की तैयारियाँ चल रही थीं तब कमेटी ने मुझे इसका हिस्सा बनने को कहा तो मै तुरन्त तैयार नही हुआ। मेरा कहना था कि एयरकंडिशन कमरे मे बैठ कर हम खूब बातचीत कर सकते हैं लेकिन क्या आम आदमी को "संघवाद" (फेडरलिज्म) शब्द तक का मतलब भर पता है? मैंने सरकार को सुझाव दिया कि सघीयता के पहलू के बारे में कला के जरिये आम आदमी को इसके मुख्य मूल्य और फायदे बेहतर तरीके से समझाये जा सकते हैं। तब सरकार ने "बाहुल्य", "संयुक्त" और "सक्षम" जैसे तीन शब्दों के नारे के सार को समझ कर 'सांझा सफर' नाम से 4 दिवसीय महापर्व आयोजित करने का भार मुझे ही सौंप दिया। यह कार्यक्रम मुख्य सम्मेलन का सहआयोजन था।

इस देश की साझी विरासत, परम्परा और आधुनिक मूल्या के मिले–जुले रूप मे यह महापर्व पूरी तरह से "जनता का कार्यक्रम" था। 'साझा सफर' ने भारत की साझी विरासत की एक झलक दिखाई। यह प्रदर्शनी देशभर के प्रतिभावान, उच्च कौशल सम्पन्न और हुनरमंद लोगों की एक अद्भुत मिलन–स्थली थी––चाहे वह डिजायनर हों, वास्तुशिल्पी हों, बुनकर, दस्तकार, कारीगर, मूर्तिकार, चित्रकार, संगीतकार, गायक, नर्तक, सामाजिक कार्यकर्ता, पाक कला के विशेषज्ञ अथवा लोक कलाकार। भारत के विशाल आकार और इसकी ऐतिहासिक, भौगोलिक और राजनैतिक–सामाजिक भिन्नताओं को देखते हुए 'सांझा सफर' इस लिए विशेष आयोजन हो गया था क्योंकि तमाम भिन्नताओं और विशेषताओं को देश की सवा अरब आबादी के सामने वैसा ही प्रदर्शित किया गया जैसी कि वे हैं। मेरे मित्र सतीश दवे ने इस के बारे में कुछ इस तरह कहा––

बिखरे हैं रंग कई
आसमा के आंगन में
उछले हैं प्रश्न कई
विचारों के दामन मे
नन्हे महके खुशियो से
एक समा बनाना है,
कल की धूप के लिये
सांझा आंगन सजाना है

इस आयोजन में कई गतिविधिया संचालित की गयी। जैसे कि ... स्वामी अग्निवेश, अरूणा राय, राजेन्द्र सिंह, सुनीता नारायण, सुब्बा राव, वंदना शिवा और राज गोपाल जैसे प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ताओ ने जनता के मुद्दों की सुनवाई की। युवा संसद के जरिए आरक्षण, जल, जंगल, जमीन गठबंधन, फास्ट फूड के बढ़ते चलन और हावी होते बालीवुड जैसे ज्वलन्त विषयों पर युवाओं द्वारा विचार–विमर्श हुआ। बच्चों की कार्यशाला और उनके सृजनात्मक पक्ष को सामने रखा गया। महाविद्यालयों जैसे संगठनो द्वारा विशेष तौर पर कला–प्रदर्शन तैयार किए गए। अग्रणी गैर–सरकारी संगठनो द्वारा कलाकृतियो और शिल्प वस्तुओं की प्रदर्शनी के अलावा स्वय सहायता समूहों द्वारा पाक कला से संबंधित प्रदर्शनी आदि भी हुई। दूसरे शब्दों में, यह महापर्व उस जीवन्त सांस्कृतिक माहौल की एक झलक भर था जो सृजनात्मक कलाओं और हुनर के आपस में जुडने से बनता है।

इस माहोल का देख 'साझा सफर' के आखिरी दिन स्वामी अग्निवेश को कहना पड़ा "मेरे देश की 'जनता' की सरकार ने 'साझा सफर' की भ्रूण हत्या कर दी। पाचवे छठवें दिन शहरी शौकीनो के अलावा अभी गाव के लोगो का आना शुरू ही हुआ था कि तम्बू उखाड़ दिये गये, नाटक कलाकार उजाड दिये गये और गाव की चौपाल को तोपाड दिया गया।

कोई भी सरकार हो, कैसा भी सत्ता प्रतिष्ठान हो, टिका होता है पहचान की राजनीति पर। जब आप लोगो की आपस में टकराने वाली पहचान के बदले साझा सफर, सांझी विरासत, सांझी संस्कृति की बात चलाने लगते है तो लोगों की अलग–अलग पहचान की राजनीति करने वालों को खतरा होना स्वाभाविक होता है। इसीलिये देश की राजधानी मे राजपथ के एक तरफ एक कोने मे उभरता साझे सफर का गीत लोगों को इकट्ठा करता चला जाय यह उन्हें कैसे बर्दाश्त होता?

'साझा सफर' खत्म होने के बाद मेरे मन में कई सवालों ने जन्म लिया। तेजी से खत्म हो रही सांस्कृतिक धरोहर की अनमोल संपदा –जिसने देश की पहचान भी बनाये रखी है– कलाओं को कैसे नया रचनात्मक माहौल दिया जा सकता है? क्या सालाना 'सांझा सफर' इसका हल है? क्यो 'साझा सफर' के मिलन का मैदान हमेशा नियोजित नही रह सकता? क्यों हम "साझे" की सिर्फ बात करते है जब उसे सजो कर नही रख सकते?

सच्चाई यह है कि जब भी कोई कार्यक्रम कलाकारो के हित मे बना उसे कभी आगे बढ़ने नही दिया गया। वजह चाहे राजनैतिक हो या निजी स्वार्थ की। कलाओ को पनपने के लिए रचनात्मक माहौल की जरूरत होती है। गाने में संगीत नही हो तो क्या इतनी मिठास पैदा हो पाती? अगर संगीत के सुरों की संख्या कम कर दी जाय तो उसे पूर्ण बनाने में मुश्किल होगी। सारी कलायें एक दूसरे के साथ आपस में इस तरह गुथी हुई हैं कि इन्हें अलग करने पर इनका कोई वजूद नहीं रह जाता। जैसा विष्णु धर्मोत्तर पुराण में कहा गया है "एक चित्रकार बनने के संस्कृति को समझना जरूरी है, वास्तुकार होने के लिए नृत्य जानना आवश्यक है और नृत्य सिर्फ संगीत एव कविता के जरिये ही सम्भव है।"

आनन्दग्राम और नेहरू कला कुंज दो ऐसी परियोजनाये है जिनकी 'साझा सफर' ने झलक भर दिखाई थी। यह योजनाये एक ऐसा रचनात्मक कला माहौल बनाने के लिए हैं जो हमेशा रहता, और जिसे कभी कोई उजाड नही पाता, जहॉं हर रोज एक दूसरे के साथ जुडने से नई कृतियां बनती।

अपनी इसी भूली बिखरी पहचान को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए हमें खास समूह बनाने होंगे। हमारा भविष्य तभी उज्जवल हो सकता है जब हम पारम्परिक ज्ञान व सृजनात्मक कौशल को हमारे समय की मुख्यधारा मे ला सके।

क्या यह ध्यान देने वाली बात नही है कि भारत में कृषि के बाद सबसे ज्यादा रोजगार सांस्कृतिक उद्योग से जुडे हुनरमन्दों को मिलता है? आबादी की बहुत बडी संख्या कारीगरी से जुड़ी है लेकिन दुर्भाग्य से बँटी हुई है। 2 साल पहले "सृजनात्मक और सांस्कृतिक उद्योग उप–आयोग" के गठन से इस क्षेत्र से जुडे लोगों में नई उम्मीदें जगी थीं। इस उप–आयोग का उपाध्यक्ष बनने के बाद मैने हर सम्भव प्रयास किये कि सरकार को "सृजनात्मक और सांस्कृतिक उद्योग" के महत्व के प्रति जागृत कर सकू। मैं पिछले 30 सालों से बार–बार कहता आ रहा हूँ कि कला के अलग–अलग मन्त्रालयों का केन्द्रीकरण जरूरी है। इस बार भी मैने इस बात की सिफारिश की थी कि कलाकारों को एकजुट करने से केवल कलाकार ही नहीं बल्कि देश भी मजबूत होगा। अभी तक हिन्दुस्तान में कोई ऐसा आयोग नहीं है जो सृजन और सांस्कृतिक उद्योग से जुडे मंत्रालयों को जोड कर विश्व मे उनका प्रतिनिधित्व करता हो।

मैं इस बात से इंकार नही करता कि विभिन्न पैमानो पर हमारी सास्कृतिक परम्पराओ को उजागर करने व आगे बढने के कई कार्यक्रम चल रहे है। पर आज के हालात मे यह जरूरी हो गया है कि हम अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों को नए सिरे से देखे और उन्हे फिर से परिभाषित करने की कोशिश करें। मुझे उम्मीद है कि नई रचना- ऊर्जा कलाकारों की ओर से ही प्रवाहित होगी।

हम अपने देश की इन्द्रधनुषी विरासत, बहु- सस्कृतिक विविधता मे एकता पर गर्व करते हैं। आईये हम सब कलाकारों के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'साझा सफर' का ये गीत मिलकर गाए-

चारो दिशाएं गले लगाये
राहें अलग घर एक बताये
बाहुल्य, संयुक्त, सक्षम
हर सवेरा होगा,
सांच सा सूरज चमकेगा
और साझा आंगन महकेगा।

जय हिन्द!

राजीव सेठी
(राजीव सेठी)

निमंत्रण

सुनहरे भविष्य की आशा लिए बुनकर, दस्तकार, संगीतकार, व लोक कलाकार दिल्ली की कच्ची बस्तियों के निवासी स्वतन्त्रता दिवस की पूर्व संध्या पर आप को सादर आमन्त्रित करते हैं।

कार्यक्रम :
14 अगस्त 2008
10:00 बजे प्रातः------------------------ झण्डा रोहण, राष्ट्रगान
10:05 बजे प्रातः------------------------ अतिथि भाषण
10:15 बजे प्रातः------------------------ सांस्कृतिक कार्यक्रम

कार्यक्रम स्थल :– भूले बिसरे कलाकार वर्कशॉप, कठपुतली कॉलोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली–110008

फोन न.: 25706189, 23413744

कार्यक्रम सहयोगी : भूले बिसरे कलाकार को–ऑपरेटिव सोसायटी।

आईये कला का माहौल बनायें,
कलाकारों का हौसला बढ़ायें।

शुभकामनाओं सहित

राजीव सेठी
(राजीव सेठी)

सारथी नेहरु कला कुन्ज – फ्लेट न. 4, शंकर मार्किट, नई दिल्ली –110001
फोन : 91–11–23411107, 23413744 फैक्स 23414065 ई–मेल: mail@sarthi.org
वेबसाईट www.sarthi.org